(1)

- Dr. B.K.

जेम्स - लांजे सिद्धांत

विलियम जेम्स तथा कार्ललांजे ने 1880 ई० में संवेग का सिद्धांत का प्रतिपादन किया। उपरोक्त दोनो मनोवैज्ञानिक के नाम पर यह सिद्धांत जेम्स - लांजे सिद्धांत के नाम से मशहूर हुआ। इस सिद्धांत के अनुसार पहले संवेगात्मक व्यवहार होता है तब संवेगात्मक अनुभूति होती है, यदि संवेगात्मक व्यवहार नहीं होगा, तो संवेगात्मक अनुभूति भी नहीं होगी। जैसे - हम किसी उत्तेजना से उत्तेजित होकर भाग जाते है, इसलिये डर जाते है।

जेम्स - लांजे सिद्धांत संवेग की व्याख्या निम्न-लिखित चरणों में करते हैं -

(i) जब किसी उत्तेजना से ज्ञानेंद्रियाँ उत्तेजित होती है तो तन्त्रिका आवेग उत्पन्न होता है, जो Spinal- cord होते हुए मस्तिष्क में पहुँचता है, जिससे व्यक्ति को उत्तेजना का ज्ञान होता है।

(ii) किसी उत्तेजना का ज्ञान होने से शरीर के भीतरी अंगों एवं बाह्य अंगों में परिवर्तन हो जाता है जिसके फलस्वरूप व्यक्ति संवेगात्मक व्यवहार करता है। भीतरी अंगो जैसे - हृदय, फेफड़ा, एड्रिनल ग्रंथि, वृक्क आदि उत्तेजित हो जाते है। बाह्य अंग जैसे - हाथ पैर की मांसपेशियों को क्रियाशील कर देता है। परिणामस्वरूप व्यक्ति खतरनाक उत्तेजना (कुत्ता, बाघ, सिंह आदि) को देखकर उत्तेजित हो जाता है और उसके हृदय की गति तीव्र हो जाती है, साँस तेजी से फूलने लगता है तथा एड्रिनल ग्रंथि से एड्रिनालिन निकलकर खून में मिलना शुरू कर देता है। फलतः व्यक्ति में तीव्र शारीरिक परिवर्तन होता है और वह खतरनाक उत्तेजना को देखकर भाग जाता है तथा संवेगात्मक व्यवहार प्रकट करता है।

(iii) संवेगात्मक व्यवहार घटित हो जाने के बाद मस्तिष्क को यह पता चल पाता है कि घटित व्यवहार हुआ।

मनोवैज्ञानिकों ने जेम्स- लांजे सिद्धांत की आलोचना निम्नांकित प्रकार से की है -

(i) इस सिद्धांत के अनुसार संवेगात्मक व्यवहार पहले तथा संवेगात्मक अनुभूति बाद में होती है। लेकिन सभी तरह के संवेग में एक ही तरह के संवेगात्मक व्यवहार जैसे हृदय की गति में वृद्धि, रक्तचाप में वृद्धि, साँस की गति में वृद्धि आदि देखने को मिलती है। लेकिन हमें कभी क्रोध का संवेग होता है, तो कभी डर का। अतः संवेगात्मक अनुभूति, संवेगात्मक व्यवहार पर निर्भर नहीं करती है।

(ii) इस सिद्धांत के अनुसार शारीरिक परिवर्तन की सूचना यदि मस्तिष्क को न मिले तो संवेगात्मक अनुभूति नहीं होगी। लेकिन शेरिंगटन ने कुत्ता पर एक प्रयोग कर साबित किया कि ऐसा नहीं है।

(iii) ब्रेडी, के अध्ययन से भी स्पष्ट है कि सांवेगिक अनुभूति शारीरिक परिवर्तनों पर निर्भर नहीं करती है। उन्होंने एक बंदर को एपाइफ्राइरिन का डूई दिया जिसके परिणामस्वरूप बंदर के हृदय की गति तीव्र हो गयी, रक्तचाप बढ़ गया, खून की आपूर्ति अधिक हो गयी। अब बंदर में क्रोध की सांवेगिक अनुभूति होनी चाहिये परंतु उनमें कोई ऐसी सांवेगिक अनुभूति नहीं मिला।